Impact Factor – 6.625

E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January 2021

Special Issue 259 (A)

वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्पारिकता

Guest Editor -
Dr. Vanmala Govindrao Gundre,
Principal,
Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai
Dist.- Beed

Executive Editors :
Dr. Ramesh M. Shinde
Dr. Arvind A. Ghodke
Prof. Dr. Murlidhar A. Lahade
Dr. Gopal S. Bhosale

Chief Editor : Dr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is Indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृष्ठ क्र.
1	तृतीय लिंग संवेदना के आयाम	डॉ. प्रिया ए.	07
2	अवधी लोकगीतों की धर्म एवं दर्शनमूलक दृष्टि	डॉ. गरिमा जैन	11
3	हिंदी कहानियों में आदिवासी विमर्श	डॉ. मालती शिंदे - चव्हाण	20
4	समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री – विमर्श कि चुनौतियाँ	डॉ. दीपक पवार	24
5	स्त्री के संघर्ष की व्यथा (सुरेन्द्र वर्मा के 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक के विशेष संदर्भ में)	प्रो. ए. जे. बेवले	28
6	बदलते परिदृश्य में स्त्री का अस्तित्व	डॉ. संगीता लोमटे	32
7	किसान का आदर्श मानविय रूप (सुजान भगत के संदर्भ में)	डॉ. शिवाजी वैद्य	38
8	भीष्म साहनी के नाटकों में स्त्री शोषण के विविध आयाम	सोनम सिंह	41
9	वैश्विक साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य	प्रा. ज्ञानेश्वर बगनर, डॉ. एस. डी. लांडे	44
10	हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना	डॉ. विजय बाप	47
11	हिंदी दलित साहित्यकार मोहनदास नैमिशराय के उपन्यासों में अम्बेडकरवादी विचारधारा	डॉ. संगीता उप्पे	50
12	स्त्री विमर्श - असहज स्थिति : यातना और संघर्ष का द्वंद्व	डॉ. रश्मि पाण्डेय	58
13	हिंदी दलित कथा साहित्य में नारी	डॉ. रमेश कांबळे	62
14	अंतिम दशक में हिंदी उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ. दत्ता साकोळे	65
15	सामाजिक प्रतिष्ठा में बेचैन नारी	डॉ. अरविंद घोडके	68
16	हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श	आशा फड	71
17	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविताओं में समकालीनता	डॉ. नंदकिशोर चिताडे	74
18	अज्ञेय की कविताओं में सामाजिकता	डॉ. प्रकाश खुळे	78
19	सभ्यता, संस्कृति और साहित्य	डॉ. अर्चना परदेशी	82
20	भारत और विदेशों में ट्रांसजेंडर की स्थिति : विशेष संदर्भ 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी'	अमर आलदे	87
21	किसान विमर्श	डॉ. विनोद जाधव	91
22	नारायण सुर्वे की कविता 'अनुवाद के पक्ष'	डॉ. प्रकाश कोपर्डे	96
23	समकालीन भारतीय विमर्श की वैश्विक पारस्परिकता : स्त्री विमर्श	डॉ. राजश्री भामरे, मेघराज खरोटमल	102
24	किन्नर समाज को प्रेरणा देती आत्मकथा 'मै हिजडा मै लक्ष्मी'	डॉ. वायजा कोटूळे	105
25	मिडीया और महिलाएँ	डॉ. सोमा गोंडाणे	108
26	किन्नर विमर्श : दशा एवं दिशा	डॉ. राजश्री भामरे	111
27	किन्नर - जीवन या अभिशाप	लालमोहन राम	116
28	'क्या मुझे खरीदोगे?' : भारतीय स्त्री की विद्रोह कथा	डॉ. सन्मुख मुच्छटे	121
29	विश्व साहित्य में प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान	डॉ. मुक्ता अग्रवाल	125
30	विश्व साहित्य में हिंदी साहित्य का योगदान (उपन्यास तथा कहानी साहित्य के संदर्भ में)	डॉ. विक्रमसिंह पवार	128
31	'आवदान' में व्यक्त दलित कोंती चेतना	माधवराव जोशी	132
32	किन्नरों में निहित धार्मिक एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव	डॉ. कैप्टन बाबासाहेब माने	136
33	भारतीय संस्कृति और साहित्य	कु. राजकन्या भगत	141

Scanned by CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019),
Special Issue -259 (C) वैश्विक परिदृश्य में भारतीय भाषाएं, संस्कृति और साहित्य की पारस्परिकता'
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
Jan. 2021

अंतिम दशक में हिन्दी उपन्यासों में स्त्री विमर्श

डॉ. दत्ता शीवराम साकोळे
सहायक प्राध्यापक
शिक्षण महर्षी ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय, कळंब
ता. कळंब. जि, उस्मानाबाद.

अंतिम दशक भारी उथल पुथल का दशक माना जाता है । साहित्य की अगल-अलग विधाओं में उपन्यास एक सशक्त एंव लोकप्रिय विधा हैं । उपन्यास विधा मनुष्य के अंतरंग की अनुभुतियों को यथार्थ ढंग से प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास करती है । हिन्दी उपन्यास विधा ने अपने उद्गम से लेकर आज तक अलग-अलग विषयों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिसमें स्वानुभूति के अधार पर महिला लेखिकाओं ने अपने विचारों का सशक्त ढंग से रखा है। नारी को केन्द् में रखकर नारी के आन्तरिक एंव बाहरी जीवन को खोलनेका कार्य मन्नू भण्डारी, कृष्ण सोबती, मेहरुन्निसा परवेज, मदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, सुर्यबाला, लका सरावगी एंव कमल कुमार आदि लेखिकाओं ने किया है।

वस्तुतः नारी चेतना की मुहिम स्वंय स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रुप में अनुभव करने और करवाने का आंदोलन है। मैं मनुष्य हूँ और मनुष्य की ही भाँति समाज में रहने की अधिकारी हूँ। मेरा स्व दाँव पर न लगे। मेरी अस्मिता सुरक्षित रहे - इसके लिए उसे यह निश्चित करना होगा कि वह अपनी अस्मिता की लडाई कैसे लडे। अपना अधिकार कैसे पाए। उसे पुरुष के कदम में कदम मिलाकर चलने के लिए सोचना नही है, वरन् ऐसा प्रकाशमान आदर्श रखना है कि पुरूष ही उसका अनुकरण करे।

यह अलग सवाल है कि नारी से संबंध में पुरुष मानसिकता को संकीर्ण माना जाए और नारी के स्वानुभव को प्रमाणित। परंतु देखा गया है कि स्त्री ही स्त्री के शोषण की कारण है। फिर क्या पाँच प्रतिशत शिक्षित नारी की पीडा को अभिव्यक्ती देने वाले हिंदी महिला - लेखन को नारी चेतना के प्रतिनिधीत्व का अधिकार है ? यदि उनके कथन में ईमानदारी है, तो यह कहाँ तक सच है ? डॉ. गोपाल राय इससे ऊपर उठकर सोचतें है।

वस्तुतः साहित्य संवेदना का क्षेत्र और स्वरुप अभिव्यक्त होने की हद तक जटिल होता है। अतः यह मानकर चलना ही युक्तिसंगत है कि स्त्री हो या पुरुष काव्यात्मक संवेदना के स्तर पर वह निजी सीमाओं से उठकर एक विशेष सर्जनात्मक व्यक्तित्व बन जाता है और यह सर्जनात्म व्यक्तित्त्व ही उसे बडा या छोटा लेखक बनाता है। इसलिए पुरुष - महिला लेखन का भेद किये बिना इस दशक के हिंदी उपन्यासों में नारी - चेतना के विविध आयाम किस प्रकार चित्रित हो पाए हैं, उसका विवेचन अनुशीलन यहाँ अभिष्ट है।

अपनी अस्मिता, तेवर और जुझारु प्रवृत्ति के कारण समाज के ताने, व्यंग्योक्तियों एवं विषम परिस्थितियों से रु-ब-रु करनेवाली नारी है सुष्मिता पति को ऐसी नारी पर गर्व है भले ही ऐसी नारी को कदम - कदम पर खतरों से खेलना पडता है। उपन्यास में अहम सवाल है कि सुष्मिताजी होने की जरुरत क्यों पडती है किसी को यहाँ सुष्मिताजी के व्यक्तित्व की अंतरंगता से साक्षात्कार कराया गया है। लेखक का मानना है, कहते हैं, अपवादात्मक चरित्र साहित्य नहीं बनते। लेकिन कभी - कभी जिंदगी में ऐसे चरित्र टकराते हैं जो आप हर्गिज नहीं होत। ऐसे लोगों की बात करने की इच्छा होती है, उसे दबाया नहीं जा सकता। दबाया जाना भी नहीं चाहिए। वह अपने को अपमानिक करने की साजिश को हवा में उडा देती है। प्रो. सुष्मिताजी को ऐसा निर्णय लेते देर नहीं लगती।

फोटो की लिफाफा मुस्कुराते हुए सुष्मिताजी ने ले तो लिया, पर वह व्यंग्य का ताना मारने से नहीं चुकी। बोली - मेरी बेटियाँ भेजती तो सीधे मुझे हीन भेजती ? उनकी तस्वीरे मेरे पास या घुम - फिरकर थोडे ही आती। इसे हल्के से

Scanned by CamScanner

व्यंग्य में भी सुष्मिताजी ने इंसानी अंतर - सागर की कौन सी दर्दीली सीपियाँ तल से चुनकर रीना के विचार तट पर बिखरा दीं।

वह अशिक्षित घरेलू, दुनियादारी नारी इस टीस को भीतर तक महसूस हुई सुष्मिताजी को। सुष्मिताजी देखती रह गई उन रंग बिरंगी तस्वीरों को जिसमें किसी और परिवार के बालक बच्चे खडे थे फिर भी सुष्मिताजी के नेह मनके जडे थे उन किलकारियों में ..... खुशियों में। और वरुन सक्सेना देखते रह गए उन दो तटों को जिनके दरम्यान उनकी जिंदगी ताउम्र हिचकोले खाती घुमती - फिरती डगमगाती रही ..... तीन लोक के मानिंद लेकीन जेहन में आ जुटे थे उस दो पहर, उसे छोटे से कमरे में उन दौडते भागते पलों के छोटे टुकडे में .....

औरत की अंतहीन यात्रा की अगली कडियाँ है औरत (डॉ. शिवप्रसाद सिंह १९९२), आओ पेपे घर चलें (डॉ. प्रभा खेतान, १९९०), छिन्नमस्ता (डॉ. प्रभा खेतान, १९९३) थकी हुई सुबह (डॉ. रामदरश मिश्र) और मुझे चाँद चाहिए (सुरेंद्र वर्मा) औरत में उत्तर प्रदेश की नारी को केन्द्रीय विषय के रुप में रखा गया है। सौनवा, रुपवा, प्रतिमा, वत्सला, चंद्रा, गुलशन, आपा, रौशन, रजिया, सुखिया आदि के चरित्रों की जाँच पडताल की गई है। संवदेना के स्तर पर इनका व्यापक प्रभाव नही पडता। वैचारिक स्तर पर इसकी वकालत करना चाहता है पर गहन संवेदना के अभाव में कोई छाप नहीं छोड पाता। आओ पेपे घर चलें, में एक भारतीय स्त्री आँखों से अमरीकी समाज में नारी की त्रासद स्थितियों का चित्राकंन है। अमरीकी नारी बाह्य समृध्दि चकाचौंध के बावजूद भटक रही है। अकेलेपन से जूझ रही है। दिशाहीन है। इसके साथ - साथ प्रभा अपने संघर्ष को रेखांकित करती जाती है और भारतीय नारी कि विशिष्टता मूल्यांकित करती है।

छिन्नमस्ता एक ऐसी स्त्री की यात्रा है जो स्त्री होने की जड जकडनों के खिलाफ निरंतर संघर्ष करती हुई स्वंय होने तक की यात्रा तय करती है। नायिका प्रिया पूव्रदीत शैली में अपनी अतित जिंदगी का लेखा - जोखा लेती है और पाती है।

भारत में प्रतीकों स्त्रियाँ (एंट्रोन रीच) ही इक्का-दुक्का स्वतंत्र हुई है। उनका प्रगति आख्यान प्रसंग से अधिक का गौरव हासिल नहीं कर सका है। देश की अधिसंख्य महिलाएँ झुग्गियों से लेकर विशालकाय अग्रवाल और गूप्ता हाउस की बहु बेटियों तक आज भी या तो पुण्य पदार्थ (समान कामोडिटी) हैं या शो पीस।

प्रिया की जिंदगी एक आधुनिक पढी - लिखी युवती के अभिशप्त जीवन की त्रासद गाथा है। वह अपनी जिंदगी फिल्म की तरह टुकडों - टुकडों में बेतरतीब उभरती दिखाई देती है। माँ - भाई - बहनों के प्यार से वंचित, नौ - दस की उम्र में अपने सगे भाई के बलात्कार से पीडित बाइस - तेईस वर्ष उम्र में अपने प्रोफेसर की कामवासना की शिकार .....। आर्थिक दृष्टि से संपन्न कहे जाने वाले समाज में भी एक शिक्षित और संवेदनशील नारी की यह स्थिती एक नंगी वास्तविकता है। प्रभा ने इस यथार्थ का विश्वसनीय और मार्मिक अंकन किया है।

मुझे चाँद चाहिए (सुरेन्द्र वर्मा) में भी नारी को पग - पग पर छल - शोषण और यंत्रणा का शिकार होना पडता है। पुरुष की रुग्ण और सडी - गली मानसिकता, उसके छद्मचरित्र नारी के प्रति उसके हन्शीपन कभी नारी को चैन नहीरं लेने देते। नाटक और उसके संघर्ष के एक - एक क्षण को यहाँ समुचित अभिव्यक्ति मिली है। नारी लेखिका किस प्रकार नारी चरित्र की अतंरंगता से साक्षात्कार करती है और अपने अनुभव के व्यापक संसार से नारी चरित्रों की पीडा उकेरती है - यह उल्लेखनीय है। नारी - नारी का शोषण करना छोडकर उसका हमदर्द बने तो शोषण से मुक्ति का दरवाजा स्वयं खुलेगा। खोजा तिन पाइया (डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना) में कुसुम नामक नारी की कमला को विनय से मिलाकर आपसी दरार पाटती है।

एक अकेली स्त्री का जीवन - संघर्ष है थकी हुई सुबह। ग्रामीण परिवेश के तीखे अनुभवों से गुजरते अमानुषिक यंत्रणाओं के बीच जीवन बिताती शोभा बुआ, मैना, दिदी, सुहागी बुआ और स्वयं लछिमी (लक्ष्मी : नायिका) लछिमी का आत्मकथ्य नारी शोषण का प्रमाण है :

Scanned by CamScanner

लक्ष्मी का जीवन अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों की इच्छा के लिए प्रतिश्रुत रहते हुए बीतता है। वैधव्य के अकेलेपन का पछतावा उसे ऐसी थकी सुबह के रूप में बदल देती है जिसमें संचारित होने वाली ऊर्जा, ऊष्मा हिरण्यमयी आभा बुझ गई है।

कुंतो (भीष्म सहानी, १९९३) में जयदेव सुषमा और गिरीश कुंतो के आपसी संबंधों से नारी यंत्रणा और पीड़ा का जन्म होता है। पारस्परिक संबंध, सामाजिक सरोकारा और घटना प्रवाह के उतार चढ़ाव नारी को तोड़ने के कारण बनते हैं। इसमें स्त्री की पग - पग पर झेलती विडम्बनाओं ओर यंत्रणाओं का बेबाक चित्रण होता है।

डॉ. विरेन्द्र सक्सेना नारी की आजादी के कायल है। इस हद तक कि यह स्वेच्छा से पर पुरुष से देह संपर्क करने में भी स्वतंत्र है। इसलिए कि दुरही - तिहरी मानसिकता लेकर घुट - घुटकर जीनेसे बेहतर होकर जीना। लेखक का ध्यान इस ओर रहाता है कि नारी का स्व दाँव पर न लेंगे। वह पति की दासी न हो। उसकी अलग - अलग पहचान उभरें। समाज में उसे समानता का हक मिले। वह पति से भी कुछ न छिपाए, पर पुरुष से देह - संबंध भी नहीं। विनय के साथ कुसुम देह प्रकरण के बाद सहज हो जाती है। प्रवीणा भी। ओढ़ी नैतिकता की खाल से निकलना चाहती है।

लेखन की मान्यता लीक से अलग हटकर है कि देह से परे भी स्त्री - पुरुष की मित्रता कायम रह सकती है। बैध्दिकता के स्तर पर स्त्री पुरुष के बीच भी थोडा सा संयम बतरंने पर लगभग वैसी ही मित्रता रखी जा सकती है। जैसी के दो पुरुष मित्रों में या सहेलियों में।

प्रवीणा ऐसी नारी है, जो अपने मित्र विनय को बता सकती है कि उसका पति राजेन्द्र उसके साथ संबंधों में कभी गंभीरता नहीं ला पाया। और उसे वक्त काटने की चीज मानता रहा। यहाँ कमला ऐसी विवाहिता और पतिव्रता नारी भी है जो पति को शक की निगाह से देखती है और बराबर भी रहती है। लेखक की मान्यता है कि नारी को पति में विश्वास करना चाहिए। उसके विश्वास को जीतना चाहिए। पारस्पारिक समझदारी विकसित करनी चाहिए। इसी में नारी का कल्याण है। खंडितराग में नारी का द्वंन्द्व प्रवृत्ति बनाम प्रवृत्ति का है। प्रेम की प्रगाढता के बावजूद विनय निर्मला को विवाह के पूर्व पा नहीं सकता है जब कि खराब मौसम के बावजूद में प्रवृत्ति और विधान अर्थात् राग और विवाह से जुडी नैतिका का द्वंन्द्व पग -पग पर है। उनके तीनों ही उपन्यासों में नारियाँ (कमला को छोडकर) प्रेमचंद के कंपर्नेनियनशिप (मालती मेहता) का साहसी हिमायती है। कैंपो (खंडित राग) का कहना है वैसे हम सभी प्राय : खंडीत होकर जीने को अभिशप्त है, लेकिन अगर कोई दोस्त मिल जाए जो बराबरी के स्तर पर समझ - समझा सके तो खंडित जीवन खंड - खंड होने से बचा जाता है।

इस प्रकार से अंतितम दशक के हिन्दी उपन्यासों में नारी समस्याओं का चित्रण कलात्मक ढंग किया है।

संदर्भ :

१) महिला लेखन : अस्मिता की खोजः चित्रा मुद्गल - दैनिक हिंदुस्तान, दिल्ली, अक्टूबर - ९५
२) समाकालीन हिंदी उपन्यास में नारी : डॉ. गोपाल राय, भाषा, जुलाई - अगस्त - १९९४
३) वंश : प्रबोध कुमार गोविल, १९९३ कादंबरी प्रकाशन, ५४६१, जवाहर नगर, विशामार्किट, नई न्यू चंद्रावल, दिल्ली - पृष्ठ ६५१.
४) उपरियत् - पृष्ठ ७११०
५) हंस - सितबर, १९९३ विद्यानिधी द्वारा की गई समीक्षा।
६) इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली - ११०००७

Scanned by CamScanner